Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal

(International Open Access, Peer-reviewed & Refereed Journal)

(Multidisciplinary, Monthly, Multilanguage)

* Vol-3* *Issue-1* *January 2026*

www.researchvidyapith.com ISSN (Online): 3048-7331

बदलते परिवेश में भारत–नेपाल के प्राचीन परंपराओं व सांस्कृतिक संबंधों का एक विश्लेषण

सचिन कुमार पाण्डेय

रिसर्च स्कॉलर, राजनीति विज्ञान एवं मानवाधिकार विभाग, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश

Article Info: *(Recieved- 19/11/2025, Accept- 16/12/2025, Published- 10/01/2026)*

DOI- 10.70650/rvimj.2026v3i10021

शोध सार– भारत–नेपाल के बीच वैदिक काल से ही ऐतिहासिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, आर्थिक एवं भौगोलिक संबंध अत्यंत सन्निकट रहे हैं। दोनों राष्ट्रों के बीच खुली सीमा होने से सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों में घनिष्टता होने के साथ दीर्घकालीक आर्थिक एवं सामरिक सहयोग रहा हैं। परंतु बदलते वैश्विक घटनाक्रम में नेपाल में चीन की बढ़ती राजनीतिक व आर्थिक महत्वाकांक्षा ने भारत–नेपाल के प्राचीन सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को नेपाल के राजनीतिक पर्दे के पीछे से कही न कही दुष्प्रभावित करने के साथ दुरीयां बढ़ाने की कोशिश करता रहा हैं। इस शोध पत्र के माध्यम से भारत–नेपाल के बीच प्राचीन परंपराओं व सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का पड़ताल की गई है। साथ ही बदलते परिदृश्य में सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों का रूपांतरण भारत–नेपाल के प्राचीन सामाजिक परंपराओं एवं सांस्कृतिक संबंधों में हुए परिवर्तन व उतार–चढ़ाव को प्रगाढ़ करने के लिए भारत व नेपाल के बीच लिए गए निर्णयों के अंतर्गत विभिन्न प्रकार के नीतियों ,कार्यक्रमों व आयोजनों के साथ सहयोग के पड़ताल पर आधारित है। शोध पत्र का अभीष्ट है।

मुख्य शब्द– सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, शैक्षणिक, राजनीतिक।

शोध प्रविधि– प्रस्तुत लेख एक शोध पत्र है इसमें ऐतिहासिक व विश्लेषणात्मक अध्ययन पद्धति का प्रयोग किया गया है। इस शोध पत्र में द्वितीयक तथ्यों व आकड़ों का प्रयोग किया गया है। इसमें विषय से संबंधित पुस्तकों, शोध पत्रों , समाचार पत्रों में प्रकाशित लेख एंव विषय विशेषज्ञों के व्यक्तव्यों एंव तथ्यों से प्राप्त जानकारी के आधार पर विश्लेषण किया गया है।

अध्ययन उद्देश्य– भारत–नेपाल संबंध में विगत वर्षों में राजनीतिक घटनाक्रम में परिवर्तन से उत्पन्न विवादों का सामाजिक एंव सांस्कृतिक सम्बन्ध पर पड़ते प्रभाव की पड़ताल पर आधारित शोध पत्र है। इस शोध पत्र में सामाजिक एंव सांस्कृतिक संबंधों में किस प्रकार से भारत एंव नेपाल के लोगो में बदलाव आया है और भारत एंव नेपाल सम्बन्ध में इसका क्या प्रभाव पड़ा है इसकी जाँच पर आधारित लेख है।

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि– सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को अंतर्राष्ट्रीय राजनीति के यथार्थवादी विचारों ने सॉफ्ट पावर की संज्ञा प्रदान की है। वर्तमान अन्तराष्ट्रीय राजनीति में इसका प्रयोग काफी राष्ट्रों के मध्य बढ़ गया है जिसमे से नेपाल और भारत के बीच भी सॉफ्ट पॉवर का प्रयोग अत्यधिक होने लगा है। सॉफ्ट पॉवर शब्द का प्रयोग जोसेफ नाई के द्वारा वर्ष 1990 में दिया गया था इसके अंतर्गत मृदु शक्ति के तीन साधनों को विवेचित किया है दृ संस्कृति, राजनीतिक मुल्य एवं विदेश नीति। यह एक वृहद अवधारणा है जो मुख्यतः मनोवैज्ञानिक रूप से दुसरो को प्रभावित करने या हितों की पूर्ति का साधन है। नेपाल एशिया महाद्वीप का ही एक भाग है। नेपाल की प्राकृतिक बनावट एंव उसकी जलवायु का प्रभाव वहाँ के निवासियों पर स्पष्ट रूप से परीलक्षित होता है। भारत के उत्तर में स्थित नेपाल एक भुआवेष्ठित राष्ट्र है। विश्व के मानचित्र में यह 26.20 डिग्री और 30. 10 डिग्री उत्तरी अक्षांश तथा 80.15 डिग्री व 88.10 डिग्री पूर्वी देशांतर रेखाओं के बीच स्थित है। इसका क्षेत्रफल 147181 वर्ग किलोमीटर है। यह लम्बाई में 800 किलोमीटर तथा चौड़ाई में 193 किलोमीटर दुरी तक फैला हुआ है। समुंद तल से इसकी ऊंचाई 300 से 29028 फीट तक है। यह उत्तर में चीन के अधीन स्वायत राज्य तिब्बत से, पूरब में सिक्किम से पूरब–दक्षिण,दक्षिण–पश्चिम में क्रमशरू बिहार ,उत्तरप्रदेश तथा उत्तराखंड राज्यों से घिरा है। प्राकृतिक बनावट के अनुसार मुख्यतः तीन भागो में बंटा हुआ प्रतीत होता है।

(क) उत्तर का पर्वतीय अथवा हिमालयी प्रदेश
(ख) मध्यवर्ती पहाड़ी व घाटियाँ और
(ग) दक्षिण का तराई प्रदेश

संसार की सबसे ऊँची माउन्ट एवरेस्ट की चोटी नेपाल में ही है। इसकी जनसंख्या लगभग सात करोड़ है। जो सात राज्यों के 75 जिलों में निवासरत है। दक्षिण एशिया में नेपाल और भारत एक ऐसा पडोसी राष्ट्र है जिसका प्राचीन काल से सामाजिक–सांस्कृतिक सम्बन्धों का गहरा इतिहास रहा है। इसके साथ राजनीतिक व आर्थिक संबंधों का अनूठा उदाहण प्रस्तुत करता है। नेपाल भारत और चीन के मध्य में स्थित भू –बध्य राष्ट्र है जिसकी कोई भी सीमा समुंद्र तट से नही लगती। भारत व नेपाल की लगभग 1800 किलोमीटर खुली सीमा है जो नागरिको को बिना वीजा के एक राष्ट्र से दुसरे राष्ट्र में आवागमन के साथ सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक व व्यापारिक संबंधों का एक अनूठा उदाहरण भू–पटल पर प्रस्तुत करता है जो शायद ही विश्व के अन्य राष्ट्रों के मध्य देखने को मिले। नेपाल भारत व चीन के मध्य में स्थित होने के कारण भारत व चीन दोनों राष्ट्रों के लिए नेपाल सामरिक दृष्टिकोण से बहुत मायने रखता है। भारत व चीन के साथ नेपाल का संबंध इतिहासकारों ने सामाजिक व सांस्कृतिक जुडाव का जिक्र किया है जो भारत–नेपाल के बीच राजनीतिक संबंधों में उतार–चढ़ाव से इन सम्बन्धों पर कोई गहरा प्रभाव नही डाल सका क्योकि यह सम्बन्ध लोगो के मध्य भावनात्मक रूप से जुड़े हुए है।

वैदिक काल से ही धार्मिक ग्रंथो व लेखों में वर्णित कथाओ के अनुसार भारत व नेपाल के बीच सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों के जुड़ाव के कारण वैवाहिक संबंध होते आ रहे है जो राजा–महाराजों के समय भी होते थे उसमें बहुचर्चित अयोध्या व जनकपुर के बीच श्रीराम और जनक नंदनी वैदेही (सीता) के बीच वैवाहिक सम्बन्ध का वर्णन बहुचर्चित है। इसके साथ ही दोनों राष्ट्रों के मध्य राजघरानों के बीच वैवाहिक संबंध होते आये है। वही वर्तमान में भी लोगो के मध्य भी वैवाहिक सम्बन्ध देखने को मिलते है। इसका प्रमुख कारण दोनों राष्ट्रों में बहुल हिन्दू जनसंख्या का होना है। यदि नेपाल और भारत के बीच भौगोलिक रूप से खीची सीमा रेखा को हटा दिया जाये तो लोगो को पहचान पाना मुश्किल हो जाएगा कि अमुक व्यक्ति भारत या नेपाल से है क्योकि हिन्दू बहुल जनसंख्या होने से दोनों देशों का पर्व त्योहार, भाषा, खान–पान काफी मिलता–जुलता है। दोनों राष्ट्रों के मध्य लोगों के बीच नेपाली, मैथली व हिंदी भाषा बहुत अच्छे से जानते, समझते व बोलते है। इसके साथ हिन्दू धर्म से सम्बन्धित पौराणिक व धार्मिक स्थल व धरोहर दोनों राष्ट्र में विद्यमान है। इसमें नेपाल के काठमांडू में पशुपति नाथ मंदिर, रामायण से जुडी जनकपुर में विद्यमान वैदेही की जन्मस्थली है। इसके साथ ही बौद्ध धर्म से सम्बन्धित लुम्बनी के अलावा कई अन्य धार्मिक व पौराणिक स्थल है जो भारतीयों पर्यटकों के मुख्य आकर्षण के साथ–साथ धार्मिक विश्वास के प्रतीक बना हुआ है। वही भारत में पुराणों में वर्णित चार धाम स्थल क्रमशरू उडीसा के पुरी में अवस्थित जगन्नाथ धाम, गुजरात में द्वारिकापुरी, उतराखंड में बद्रीनाथ तथा तमिलनाडु में श्रीराम द्वारा स्थापित शिव को समर्पित रामेश्वरम के अलावा काशी, मथुरा, अयोध्या, वृन्दावन एवं इसके अलावा हजारों की संख्या में मंदिर व स्थल विद्यमान है जो नेपाल के लोगो का भी धार्मिक विश्वास का केंद्र बना हुआ है। इन धार्मिक स्थलों व धरोहरों का दोनों राष्ट्रों में मौजूद होने से दोनों देशों के नागरिक एक से दुसरे जगह काफी आसानी से भ्रमण व दर्शन के लिए बिना किसी वीजा के आते–जाते रहते है। यह पौराणिक व धार्मिक स्थल एवं धरोहर ही है जो विश्व पटल पर भारत–नेपाल के बीच एक अलग पहचान के साथ संबंधों में गहराई को दिखाता है। वैश्विक पटल पर मौजूद चीन व पाकिस्तान राजनीतिक महत्वाकांक्षा के उद्देश्य से अलगाव व संबंधों में दरारे डालने की कोशिश भी समय–समय पर करते आ रहे है। लेकिन विफल साबित हुआ है क्योकि दोनों देशों के लोगो के मध्य कई पीढियों से संबंध एक–दूसरे के प्रति अटूट विश्वाश के साथ भावनात्मक रूप मे जुड़े हुए है जो लोगो के बीच व्यवहारिक रूप में परीलक्षित होता है। इन स्थलों व धरोहरों को भारत सरकार के द्वारा एक–दुसरे से जोड़ने के लिए सडक मार्गों के निर्माण के माध्यम से बसों के साथ एवं हवाई मार्गों के माध्यम से भी जोडेने का अनूठा प्रयास किया जा रहा है। जिसमे अयोध्या से जनकपुर, दिल्ली से काठमांडू व उत्तर प्रदेश के गोरखपुर से लुम्बनी, बिहार के सीतामढ़ी से जनकपुर के लिए सरकारी बस सेवायें संचालित की गई है जो दोनों राष्ट्रों के लोगो के मध्य आपसी संबंधों में गहराई लाने का एक अनूठा प्रयास है। इससे सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों को और मजबुती प्रदान करने के साथ साथ नई उंचाई तक ले जाएगा। भारत व नेपाल के मध्य सांस्कृतिक संबंधों की एक महत्वपूर्ण कड़ी रही है जो न केवल सामाजिक,आर्थिक एवं राजनीतिक संबंधों को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि दोनों राष्ट्रों के लोगों के मध्य भावनात्मक जुड़ाव के साथ सांस्कृतिक धरहारों को सँजोने के अलावा संबंधों को अंतरूमन की गहराई तक पिरोया है जो किसी भी राजनीतिक उथल–पुथल से विलग न हो सका, बल्कि घनिष्ट होते चला गया। भारत व नेपाल एक जैविक सांस्कृतिक संबंध साझा करते है। कला, संस्कृति, शिक्षा और मीडिया के क्षेत्र में लोगों से लोगों के बीच संपर्क को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार की पहलों में भारत और नेपाल दोनों में प्रासंगिक विशिष्ट आयोजनों और कार्यक्रमों के माध्यम से सांस्कृतिक पहुँच शामिल है। इन आयोजनों में शैक्षणिक संगोष्ठीयां तथा सेमीनार, सांस्कृतिक

कार्यक्रम कार्यशालाएं और गोलमेज की बैठकें शामिल हैं। नेपाल में विभिन्न सरकारी निकायों के साथ–साथ संबंधित निजी संगठनों के साथ साझेदारी में आयोजित किए जा रहे हैं। भारत की संस्कृति की सर्वोतम झलक दिखाने के लिए अगस्त 2007 में नेपाल के काठमांडू स्थित भारतीय दूतावास के माध्यम से स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र की स्थापना की गयी थी। जिसका उद्देश्य नेपाल के लोगों के साथ भारतीय संस्कृति की विविधता और भावना को प्रसारित करना है। इस केंद्र के माध्यम से भारतीय कला और संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए नेपाली संगठनों के साथ मिलकर कार्य कर रहा है। जिनमें दिसंबर 2023 में लूम्बनी में भारत–नेपाल सांस्कृतिक महोत्सव व दिसंबर 2024 में ही इसका दूसरा संस्करण जैसे बड़े पैमाने पर कार्यक्रम शामिल थे। इसके अतिरिक्त वर्ष 1956 में नेपाल के काठमांडू एक पुस्तकालय स्थापित हुई थी जिसका उदेश्य भारत व नेपाल के बीच सांस्कृतिक संबंधों और सूचना के आदान–प्रदान को बढ़ाना और मजबुत करना था। यह दशकों से भारत में रुचि रखने वालों की शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सूचनात्मक आवशकताओं को पूरा करने का प्रयास करता है। भारत एवं नेपाल के बीच सामाजिक संबंधों की जीवन–शैली एवं सांस्कृतिक परंपराओं की जड़ें इतनी गहरी है कि कोई इसे विलग करने की कल्पना भी नहीं कर सकता। दोनों देशों भारत एवं नेपाल ने धार्मिक एवं सांस्कृतिक विरासत को समृद्ध बनाने तथा इसको सँजो कर रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। जिसके कारण सांस्कृतिक विरासत को विकसित और प्रसारित करने में मदद मिली है। जिसे आज दक्षिण एशिया संस्कृति के रूप में गौरव की अनुभूति कराता हुआ विश्वविख्यात है। इन सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों की कड़ी को मजबूत करने में सिनेमा व संगीत ने भी बहुमूल्य योगदान दिया है। भारत में निर्मित हिन्दी फिल्मों ने नेपाल में नेपाली सिनेमा की भांति लोकप्रियता पायी है। इसी प्रकार नेपाली सिनेमा ने भी उतरी और उत्तर–पूर्व भारत में लोकप्रियता पायी है। इन फिल्मों के माध्यम से नेपाल के प्राकृतिक सौंदर्यता दिखाए जाने से पर्यटकों की संख्या में वृद्धि हुई है। जिसके कारण नेपाल की आर्थिक स्थिति भी मजबूत हुई है। इसके अलावा भाषा भी सामाजिक व सांस्कृतिक संबंधों को सशक्त करने की एक महत्त्वपूर्ण कड़ी रही है। इन भाषाओं में नेपाली, मैथली, भोजपुरी, हिन्दी व अवधी इत्यादि शामिल है। संस्कृत इनमें से कई भाषाओं की जननी है। नेपाल के तराई क्षेत्र में बसे लोग जिन्हें मधेसी कहा जाता है, जो मुख्यतरू भारत के बिहार एवं उत्तर प्रदेश राज्यों से विस्थापित होकर बस गए। जिनकी भाषाएं, सामाजिक संरचनाएं एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण भी इन राज्यों से मिलते है। जिसके कारण भारत के पड़ोसी राज्यों से वैवाहिक एवं सामाजिक संबंध बनाए हुए हैं। इससे इत्तर भारत में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं होने के कारण नेपाली नागरिकों को आकर्षित करती हैं। इन नागरिकों को आम–जन की भांति सुविधाएं उसी कीमत पर उपलब्ध करवायी जाती है जिस कीमत पर भारतीय जनमानस को करवाई जाती है। भारत ने नेपाल में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं के लिए समय–समय पर मेडिकल कॉलेजों की स्थापना से लेकर सस्ते दरों पर दवाइयाँ, अस्पतालों का निर्माण इत्यादि में सहयोग करता आ रहा है। नेपाल में 2015 में आए भूकंप त्रासदी के बाद ऑपरेशन मैत्री के तहत नेपाल के ग्यारह जिलों में 133 स्वास्थ्य परियोजनाओं के पुनर्निर्माण के लिए 50 मिलियन अमेरिकी डॉलर आवंटित किया गया। कोविड़–19 महामारी के दौरान भारत सरकार ने गहन चिकित्सा इकाई, बेड, वेटिलेटर, आरटी पीसीआर किट, व्यक्तिगत सुरक्षा उपकरण, एम्बुलेंस,ऑक्सीजन संयंत्र, महत्वपूर्ण दवाएं , टीके आदि सहित महत्त्वपूर्ण सहायता प्रदान की गई। इसके बाद 3 नवंबर 2023 को जाजरकोट में भूकंप एवं 26–28 सितंबर तक नेपाल के विभिन्न हिस्सों में आए विनाशकारी भू–स्खलन और बाढ़ से प्रभावित लोगों के लिए बड़ी मात्रा में स्वास्थ्य सामग्रियों के साथ अन्य आवश्यक सामग्रियों की सुविधाएं प्रदान की गई। 16–18 मई 2025 के काठमांडू में 'सगरमाथा संवाद' के पहले संस्करण के आयोजन को सुविधाजनक बनाने के लिए भारत सरकार ने नेपाल सरकार के अनुरोध पर उन्हें 15 इलेक्ट्रॉनिक वाहन उपहार में प्रदान किये।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की 2014 से लेकर अब तक नेपाल की पाँच बार यात्राएं हो चुकी है। यह दर्शाता है कि नेपाल बदलते भू–रणनीतिक समीकरण के साथ भारत के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हो चुका है। इन यात्राओं के माध्यम से प्रधानमंत्री ने सामाजिक व सांस्कृतिक एकता का भी परिचय दिया हैं। जब वर्ष 2014 में किसी भारतीय प्रधानमंत्री की सत्रह सालों के बाद नेपाल की यात्राएं हुई थी। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने काठमांडू स्थित पशुपतिनाथ मंदिर में पूजा अर्चना की। इसके बाद प्रधानमंत्री ने कहा कि मैं पूजा करके अत्यंत धन्य महसुस कर रहा हुँ। उन्होंने मंदिर ट्रस्ट को 2500 किलों चंदन दान में भी दिया तथा प्रधानमंत्री ने आगंतुक पुस्तिका में पशुपतिनाथ मंदिर को अद्वितीय बताया। इसके बाद भारत ने नेपाल के साथ अपने सांस्कृतिक संबंधों को मजबूत करने के उद्देश्य से दोनों देशों के बीच बस सेवा की शुरुआत 25 नवंबर 2014 से की है। इस अवसर पर केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गढ़करी ने कहा कि प्रधानमंत्री सभी सार्क देशों के साथ डायरेक्ट बस और ट्रेन सर्विस शुरू करना चाहते हैं। यह कदम भारत–नेपाल संबंधों को मजबूत करेगा। इसके एक वर्ष बाद ही यानी 20 फरवरी 2015 को ट्रेन की सेवा भी शुरुआत की गई। जो भारत के गोरखपुर स्टेशन से रक्सौल रेलवे स्टेशन तक जाती है। जिसमें एक हजार यात्री यात्रा कर सकते है। सात रातें आठ दिन की इस यात्रा में पशुपति नाथ मंदिर, बौद्ध स्तूप, स्वभू–नाथ काठमांडू दरबार स्कावायर और मनोकामना मंदिर दिखाए जाते हैं। यह भारतीय प्रधानमंत्री की यात्रा लगभग 17 वर्षों के बाद हुई थी जो राजनीतिक यात्रा होने के साथ सांस्कृतिक सम्बन्धों की दृष्टिकोण से काफी अहम रहा। इसके उपरांत प्रधानमंत्री सार्क शिखर सम्मलेन में भाग लेने के लिए 25–27 नवम्बर 2014 को

नेपाल की यात्रा पर गये। इस दौरान काठमांडू–वाराणसी, जनकपुर–अयोध्या और लुम्बनी –बोधगया को सिस्टर सिटी के रूप में जोड़ने की व्यवस्था संबंधी समझौता ज्ञापन हुआ। काठमांडू, जहाँ पशुपति नाथ मंदिर स्थित है वाराणसी का सिस्टर सिटी बन सकता है जहाँ, काशी विश्वनाथ मन्दिर स्थित है। काठमांडू और नेपाल के लोग प्राचीन काल से ही वाराणसी के साथ धार्मिक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक संबंधों से जुड़े हुए हैं। वहीं अयोध्या श्री रामचंद्र की जन्मभूमि एवं जनकपुर सीता जी की जन्मभूमि होने से सिस्टर सिटी के रूप में जोड़ा गया। हर पांच साल में अयोध्या से एक शोभा यात्रा जनकपुर के लिए जाती है, इसके अलावा बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बनी एवं तपोस्थली गयाजी को भी सिस्टर सिटी के रूप में जोड़ा गया जहाँ उनको ज्ञान प्राप्त हुआ। इस यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने महाबोधी मन्दिर के बोधी वृक्ष की सैंपलिंग लाकर लुम्बनी के माया देवी मन्दिर परिसर से अशोक स्तंभ के पास लगाये जाने के लिए भेंट की। यह सैंपलिंग दोनों देशों की साझा सभ्यता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है जो शांति, मित्रता तथा साझा मूल्यों का संदेश देती है। इसके साथ ही काठमांडू–दिल्ली यात्री बस सेवा शुरू की गयी। इस उपलक्ष्य पर तत्कालीन केन्द्रीय परिवहन मंत्री नितिन गड़करी ने व्यक्तव्य दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सार्क के सभी देशों के साथ डायरेक्ट बस सर्विस शुरू करना चाहते है। इस दिशा में में उठाया गया यह पहला कदम है। इससे भारत व नेपाल के बीच संबंध और मजबूत होंगे। भारत–नेपाल बस सेवा के शुरू होने के उपरांत अगले वर्ष यानी 20 फरवरी 2015 तक ट्रेन भी नेपाल जायेगी। अभी तक ट्रेन गोरखपुर रेलवे स्टेशन तक ही जाती थी। यह पहली बार है कि यह स्पेशल ट्रेन गोरखपुर से 210 किलोमीटर दूर रक्सौल रेलवे स्टेशन तक जायेगी। इससे एक हजार लोग सवारी कर सकेंगे। सात रातें आठ दिन की इस यात्रा में पशुपतिनाथ मंदिर, बौद्धस्तूप, स्वयंभूनाथम काठमांडू दरबार स्कवायर और मनोकामना देवी मंदिर दिखाए जायेंगे।

नेपाल में जब 2018 में के. पी. शर्मा ओली नेपाल के प्रधानमंत्री बने तब उनके निमंत्रण पर 11–12 मई को प्रधानमंत्री तीसरी बार नेपाल की राजकीय यात्रा पर गये इस दौरान जनकपुर एवं मुक्तिनाथ का दौरा किया और काठमांडू एवं जनकपुर में नागरिक स्वागत समारोह में भी सिरकत किये। दोनों देशों और उनके लोगों के बीच घनिष्ट धार्मिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को और मजबूत कररने के उदेश्य से दोनों प्रधानमंत्रीयों (मोदी व ओली) ने नेपाल–रामायण सर्किट को सीता के जन्मस्थान जनकपुर, अयोध्या और महाकाव्य रामायण से जुड़े अन्य स्थानों को जोड़ने का कार्य का शुभारंभ किया। जनकपुर में दोनों प्रधानमंत्रीयों ने जनकपुर और अयोध्या के बीच सीधी बस सेवा के लिए परिचालन को हरी झंडी दिया।

नेपाल के काठमांडू में आयोजित चौथे ब्रिक्स सम्मलेन (30–31 अगस्त 2018) में भाग लेने के लिए प्रधानमंत्री मोदी भी शिरकत किये। जिसकी अध्यक्षता नेपाली प्रधानमंत्री के.पी शर्मा ओली के द्वारा की जा रही थी। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी और नेपाल के प्रधानमंत्री ओली के मध्य द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा हुई तथा दोनों प्रधानमंत्रीयों ने संयुक्त रूप से पशुपतिनाथ मन्दिर परिसर में नेपाल दृ भारत मैत्री धर्मशाला का उद्घाटन किया। जिसे पशुपतिनाथ धर्मशाला से संबोधित किया जाता है। इस धर्मशाला में 400 लोगों के ठहरने की व्यवस्था है और यह धर्मशाला भारत–नेपाल मैत्री का प्रतीक है। 2014 में प्रधानमंत्री बनने के बाद मोदी ने नेपाल की अपनी पहली यात्रा में इस धर्मशाला के निर्माण का घोषणा किया था। भारत ने इसके निर्माण में 25 करोड़ रूपये की आर्थिक मदद की थी।

नेपाली प्रधानमंत्री शेर बहादुर देउबा के निमंत्रण पर बुद्ध पूर्णिमा के पवन अवसर पर 16 मई 2022 को लुम्बनी, नेपाल की आधिकारिक यात्रा की। प्रधानमंत्री के रूप में यह नरेंद्र मोदी की पांचवी और लुम्बनी की पहली यात्रा थी। इस दौरान प्रधानमंत्री मोदी ने मायादेवी मन्दिर का दर्शन किया, जिसके भीतर बुद्ध का जन्म स्थान स्थित है। इसके ऐतिहासिक अशोक स्तंभ का दर्शन बोधि वृक्ष को जल से सींचा, जिसे प्रधानमंत्री 2014 में अपनी नेपाल यात्रा के दौरान उपहार स्वरुप लाये थे। इसके बाद प्रधानमंत्री देउबा के साथ लुंबनी में नई दिल्ली स्थित अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आईबीसी) के एक भू–खण्ड पर भारत अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति एवं विरासत केंद्र के निर्माण के लिए आयोजित 'शिलान्यास' समारोह में भाग लिया। नवंबर 2021 में लुम्बनी डेवलपमेंट ट्रस्ट द्वारा आईबीसी को भू–खण्ड आवंटित किया गया था। 'शिलान्यास' समारोह के बाद दोनों प्रधानमंत्रीयों (देउबा व मोदी) ने बौद्ध केंद्र के एक मॉडल का भी अनावरण किया, जिसकी नेट–जीरो अनुपालक विश्व स्तरीय सुविधा के रूप में की गयी है, जिसमें प्रार्थना कक्ष, ध्यान केंद्र, पुस्तकालय, प्रदर्शनी हॉल कैफेटेरिया और अन्य सुविधाएँ होगी और यह दुनिया भर के बौद्ध तीर्थ यात्रियों व पर्यटकों के लिए खुला रहेगा। साथ ही लुम्बनी और कुशीनगर के बीच सिस्टर सिटी संबंध स्थापित करने के लिए सैद्धांतिक रूप से सहमत हुए तथा दोनों राष्ट्रों के लोगों को करीब लेन के लिए शैक्षिक और सांस्कृतिक आदान–प्रदान को और बढ़ने पर सहमति व्यक्त की। इसके साथ ही हस्ताक्षर किये गये समझौतों में छरू एमओयू हैं, जिसमें भारतीय सांस्कृतिक परिषद् (आईसीसीआर) और लुम्बनी बुद्धिस्ट यूनिवर्सिटी के बीच डॉ. अम्बेडकर चेयर फॉर बुद्धिस्ट स्टडीज , आईसीसीआर चेयर ऑफ़ इंडियन स्टडीज की स्थापना के लिए आईसीसीआर और सीएनएएस त्रिभुवन यूनिवर्सिटी के एमओयु; आईसीसीआर चेयर ऑफ़ इंडियन स्टडीज की स्थापना के लिए काठमांडू युनिवर्सिटी और आईसीसीआर के बीच एमओयू , काठामांडू

यूनिवर्सिटी, नेपाल और इंडियन इंस्टिट्यूट टेक्नोलॉजी मद्रास (आई आई टीएम) भारत के बीच सहयोग संबंधी एमओयू, केयू, नेपाल और आईआईटीएम के बीच मास्टर स्तरीय जॉइंट डिग्री प्रोग्राम हेतु सहमति पत्र और एसजीवीएन लिमिटेड और नेपाल इलेक्ट्रोनिक अथोरिटी (एनई) के बीच अरुण–4 प्रोजेक्ट के विकास कार्यान्वन हेतु समझौता हुआ। इसके विगत समय–समय पर नेपाल विभिन्न राष्ट्राध्यक्षों, प्रधानमंत्रीयों, विदेश मंत्रियों व अन्य मंत्रीगणों ने भी भारत की आधिकारिक राजकीय यात्रायें की है जो राजनीतिक यात्रा होने की साथ–साथ आर्थिक व सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भी काफी अहम रही जो भारत व नेपाल के सम्बन्धों को नई ऊंचाई तक पहुँचाने में अहम भूमिका अदा की है। नेपाल से आये इन गणमान्यों की चर्चा का विवरण राजनीतिक व आर्थिक संबंधों के अंतर्गत की गयी है। इस प्रकार के प्रयत्नों से दोनों देशों के सांस्कृतिक संबंधों में प्रगाढ़ता तो आयेगी, साथ ही दोनों देशों के पर्यटन उद्योग के विकास में सहायक सिद्ध होगा। अतः हम कह सकते हैं कि भारत एवं नेपाल के बीच सामाजिक एवं सांस्कृतिक संबंधों को दोनों देशों के नागरिकों ने अपनी सांस्कृतिक गतिविधियों के माध्यम से एक मजबूत आधार प्रदान किया है। पूर्व प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरु ने संस्कृति के संबंध में अपना विचार प्रकट करते हुए कहा है कि "संस्कृति का अर्थ मनुष्य का आंतरिक विकास और उसकी नैतिक उन्नति है, पारस्परिक सदव्यवहार है और एक–दूसरे को समझने की शक्ति है।''

Author's Declaration:

I/We, the author(s)/co-author(s), declare that the entire content, views, analysis, and conclusions of this article are solely my/our own. I/We take full responsibility, individually and collectively, for any errors, omissions, ethical misconduct, copyright violations, plagiarism, defamation, misrepresentation, or any legal consequences arising now or in the future. The publisher, editors, and reviewers shall not be held responsible or liable in any way for any legal, ethical, financial, or reputational claims related to this article. All responsibility rests solely with the author(s)/co-author(s), jointly and severally. I/We further affirm that there is no conflict of interest financial, personal, academic, or professional regarding the subject, findings, or publication of this article.

संदर्भ–

1. Nye, Joseph S (2004) Soft: The Means to success in the world Politics New York: Public Affairs
2. http://ssb.gov.in
3. https://www.mea.gov.in
4. https://www.indembkathmandu.gov.in
5. htttp://www.indembkathmandu.gov.in/services.offered
6. https://www.indembkathmandu.gov.in
7. https://www.mea.gov.in/prime-minister-visits.htm
8. https://www.mea.gov.in
9. http://www.indemandu.gov.in

Cite this Article

' सचिन कुमार पाण्डेय', "बदलते परिवेश में भारत–नेपाल के प्राचीन परंपराओं व सांस्कृतिक संबंधों का एक विश्लेषण", Research Vidyapith International Multidisciplinary Journal, ISSN: 3048-7331 (Online), Volume:3, Issue:1, January 2026.

"Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under Creative Commons Attribution 4.0 (CC-BY), allowing others to use, share, modify, and distribute it with proper credit to the author."